'सन्दर्भ की खोज' शीर्षक पाठ का प्रतिपाद्य लिखिए।

27.05.24 (M)

[This question paper contains 8 printed pages.]

Maitreyi College LIBRARY Chanakyapuri, New Delhi-110021

Your Roll No. H

Sr. No. of Question Paper : 1362

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : **BA (H) HINDI – CBCS**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गदयांशों की सप्रसंग व्याख्या करें : (10×3)

(क) कर्म सौन्दर्य के जिस स्वरूप पर मुग्ध होना मनुष्य के लिए स्वाभाविक हैं और जिसका विधान कवि परंपरा बराबर करती चली

आ रही है, उसके प्रति उपेक्षा प्रकट करने और कर्म सोन्दर्य के एक दूसरे पक्ष में ही केवल प्रेम और भ्रातृत्व भाव के प्रदर्शन और आचरण में ही - काव्य का उत्कर्ष मानने का जो एक नया फैशन टालस्टाय के समय से चला है, वह एकदेशीय है. दीन और असहाय जनता को निरंतर पीड़ा पहुंचाते चले जाने वाले क्रूर आततायियों को उपदेश देने, उनसे दया की भिक्षा मांगने और प्रेम जताने तथा उनकी सेवा-शुश्रूषा करने में ही कर्त्तव्य की सीमा नहीं मानी जा सकती, कर्म क्षेत्र का एक मात्र सौन्दर्य नहीं कहा जा सकता. मनुष्य के शरीर के जैसे दक्षिण और वाम दो पक्ष हैं, वैसे ही उसके हृदय के भी कोमल और कठोर, मधुर और तीक्ष्ण, दो पक्ष हैं और बराबर रहेंगे। काव्य कला की पूरी रमणीयता इन दोनों पक्षों के समन्वय के बीच मंगल या सौन्दर्य के विकास में दिखाई पड़ती है।

अथवा

और उन घटनाओं के प्रति पात्रों की तात्कालिक प्रतिक्रिया ही - कहानी का केन्द्रीय आधार बन जाती है।

2. शुक्ल पूर्व युग की हिंदी आलोचना पर एक निबंध लिखें। (15)

अथवा

द्विवेदी युगीन आलोचना की प्रमुख प्रवृतियों का वर्णन करें।

3. रामविलास शर्मा के आलोचनात्मक योगदान का मूल्यांकन करें। (15)

अथवा

हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना के महत्त्व का प्रतिपादन करें।

4. नामवर सिंह की आलोचना-शैली की विशेषताएं लिखिए। (15)

अथवा

यह एक अजीब काम्प्लेक्स है जिससे न्यूनाधिक मात्रा में हर लेखक पीड़ित दिखाई पड़ता है।

अथवा

कहानी के भावात्मक स्तर से तात्पर्य बोध के स्तर से ही ह। इसलिए इस बोध-स्तर पर थोड़े विस्तार में विचार करने की आवश्यकता ह। मैंने भावुकता का उपचार लेकर लिखी गयी कहानी और बोध-स्तर पर भावना का मर्म लेकर खुलने वाली कहानी में जो भेद किया है उसके कुछ निश्चित आधार हैं. सबसे पहला कारण कथानक के भावात्मक तत्वों के भेद के कारण सिद्ध होता ह। भावुक कहानी की कथा मानवीय संवेदना को कृत्रिम परिस्थितियों के योग से उभारने की चेष्टा करती है, फलत: उसमें वह प्रतीक ध्वनि नहीं होता जो पाठक की संवेदना के केंद्र में अपने को स्थिर कर दे। भावुक कहानियों में घटनाएँ -

मैं और चीजों की तरह कला को भी उपयोगिता की तुला पर तौलता हूँ। निसंदेह कला का उद्देश्य सौन्दर्य-वृति की पुष्टि करना है और वह हमारे आध्यात्मिक आनंद की कुंजी है; पर ऐसा कोई रुचिगत मानसिक तथा आध्यात्मिक आनंद नहीं, जो अपनी उपयोगिता का पहलू न रखता हो। आनंद स्वत: एक उपयोगिता-युक्त वस्तु है और उपयोगिता की दृष्टि से एक ही वस्तु से हमें सुख भी होता है और दु:ख भी. आसमान पर छाई लालिमा निसन्देह बड़ा सुन्दर दृश्य है; परन्तु आषाढ़ में अगर आकाश पर वैसी लालिमा छा जाये, तो वह हमें प्रसन्नता देने वाली नहीं हो सकती. इस समय तो हम आसमान पर काली--काली घटाएं देखकर ही आनंदित होते हैं।

(ख) सभ्यता के विकास के साथ-साथ हमारी अनुभूतियों का क्षेत्र भी विकसित होता गया है और अनुभूतियों को व्यक्त करने के हमारे

उपकरण भी विकसित होते गए हैं। यह कहा जा सकता है कि हमारे मूल राग-विराग नहीं बदले - प्रेम अब भी प्रेम है और घृणा अब भी घृणा, यह साधारणतया स्वीकार किया जा सकता है। पर यह भी ध्यान में रखना होगा कि राग वही रहने पर भी रागात्मक संबंधों की प्रणालियों बदल गयी हैं; और कवि का क्षेत्र रागात्मक संबंधों का क्षेत्र होने के कारण इस परिवर्तन का कवि-कर्म पर बहुत गहरा असर पड़ा है।

अथवा

अभिव्यक्ति का संघर्ष दीर्घ होता है। कला का यह तीसरा क्षण दीर्घ होता हैं। उस संघर्ष में अभ्व्यक्ति के स्तर तक आते-आते, हमारे मनोमय तत्व-रुप बदलने लगते हैं। होता यह है कि उस संघर्ष के दौरान भाषा के भीतर अवस्थित ज्ञान परंपरा और भाव परंपरा के कारण, जो पहले से ही शब्द संयोग बने हुए हैं, उन

शब्द संयोगों के साथ अनिवार्य रूप से जुड़े हुए जो अर्थानुषंग हैं, उन अर्थानुषंगों के प्रभाव में आकर, समशील-समरूप अर्थानुषंगों को आत्मसात कर, मनोमय रूप तत्व अपने को और पुष्ट करते हैं.

(ग) साधारण, रोजमर्रा की घटनाओं के महीन सूत्रों द्वारा कुछ गंभीर सत्यों को उद्घाटित करना, उनके माध्यम से पात्रों की आकांक्षाओं और असंगतियों को अभिव्यक्त करना सचमुच एक कठिन समस्या है। हमेशा यह खतरा बना रहता है कि कहीं लेखक अपनी निरपेक्ष दृष्टि से च्युत होकर एक स्थूल, इतिवृत्तात्मक दृष्टिकोण न अपना ले। यह केवल हवाई खतरा नहीं है. पिछले वर्षों में हिंदी उपन्यास का दुर्भाग्य ही यह रहा है कि लेखक अपने को सोशिलाजिस्ट पहले समझता है - कलाकार बाद में। फिर चाहे उपर्युक्त दृष्टिकोण प्रच्छन्न रूप में मनोवैज्ञानिक अंतर्दवंद्वों द्वारा प्रदर्शित हो (नदी के द्वीप) या सामाजिक विषमताओं के सम्बन्ध में लम्बी सैद्धांतिक बहसों के रूप में (बूंद और समुद्र, जयवर्धन)।